CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. २५६
१३
हि २५६
नं०४८१३

लंका विजय

हि. २५६
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुलसी-राम-कथा—१३

लंका-विजय

विश्वम्भरसहाय 'प्रेमी'

तुलसीदासजी के 'रामचरित-
मानस' के आधार पर
भगवान राम की
सरल एवं रोचक कहानी

सत्साहित्य प्रकाशन

१९५८

पुस्तक भेंट के निमित्त है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

●

पहली बार : १९५८
मूल्य
४०[redacted] नये पैसे

●

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि. २५६

प्रकाशकीय

हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा, जिसने राम का नाम न सुना हो और राम-कथा से परिचित न हो। क्या अमीर, क्या गरीब; क्या छोटा, क्या बड़ा, क्या शहरी, क्या ग्रामीण; सभी राम का नाम सुनकर गद्‌गद् हो जाते हैं। उनके नाम में कुछ ऐसा जादू है कि एक बार सुनकर तृप्ति नहीं होती, बार-बार सुनने को जी चाहता है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि राम-कथा के मुख्य-मुख्य प्रसंग लेकर इस ढंग से प्रस्तुत करें कि सामान्य पढ़े-लिखे पाठक भी उन्हें आसानी से समझ सकें और उसमें रस ले सकें। इसी उद्देश्य को सामने रखकर इस पुस्तकमाला का श्रीगणेश किया जा रहा है। 'रामायण' में पूरी राम-कथा दी हुई है। उसीमें से क्रमबद्ध घटनाएं लेकर ये पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठकों के लाभ और विषय की रोचकता की दृष्टि से बीच-बीच में कुछ चौपाइयां-दोहे भी डाल दिये गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह माला पाठकों को पसंद आयगी और वे इसको घर-घर पहुंचाने में मदद देंगे।

प्रत्येक पुस्तक में कुछ चित्र भी दिये गए हैं।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय सूची

१--कुम्भकरण-बध ५
२--मेघनाद-बध १०
३--रावण से युद्ध १५
४--रावण-बध २१
५--विभीषण का राजतिलक २८
६--सीताजी का आगमन २९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
हि. 256

लंका-विजय

: १ :

कुम्भकरण-बध

जब रावण को लक्ष्मण की मूर्छा टूटने का समाचार मिला तो वह बड़ी चिंता में पड़ गया। उसकी व्याकुलता बढ़ गई। उसने इस अवसर पर यही ठीक समझा कि वह अपने भाई कुम्भकरण से सहायता ले। इसलिए तत्काल कुम्भकरण के पास चल दिया।

यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि कुम्भकरण को बहुत नींद आती थी। इसी कारण यह कहा जाने लगा था कि वह छः महीने तक सोता है। समझना यही चाहिए कि दिन का आधा समय सोने में ही बीत जाता था।

रावण ने अपने भाई कुम्भकरण को जगाया। वह बड़ा विकराल रूपवाला था। जागने पर उसने अपने भाई रावण से पूछा, "भाई, बताओ तो तुम्हारा मुंह कैसे सूख रहा है? तुम किस चिंता में हो?"

रावण ने अपने भाई को पहले तो सीताजी के चुरा लाने का समाचार बताया। उसके पश्चात उसने कहा, "हे भाई, वानरों ने दुर्मुख, देवान्तक, अकम्पन और दूसरे अनेक बड़े-बड़े योधाओं को समाप्त कर डाला है।"

सुनि दसकंधर बचन तब, कुम्भकरन बिलखान।
जगदम्बा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्यान॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने भाई रावण की बातें सुनकर कुम्भकरण बड़ा दुःखी हुआ। परंतु उसने अपने भाई के काम की कोई भी सराहना न की बल्कि उसे डाटते हुए कहा, "अरे मूर्ख ! माता सीता को चुराकर तू अपना हित चाहता है ?"

इतना कहकर कुम्भकरण राम की शक्ति का बखान करने लगा। उसने कहा, "अब मुझे जगाने से कोई लाभ नहीं। अब तो तुम अभिमान को छोड़कर राम की शरण में जाओ। तुमने बहुत बुरा किया जो पहले ही मुझे सब बातें न बता दीं।"

इस प्रकार राम के गुणों का बखान करते हुए कुम्भकरण प्रेम में मग्न हो गया, लेकिन रावण भी बड़ा चतुर था। उसने अपने भाई को अपने अनुकूल करने के लिए उसे खूब मदिरा पिलाई। मदिरा पीकर वह वज्रपात के समान गरजा और लड़ने के लिए चल दिया। इस बात की खबर विभीषण को लगी तो वह तुरंत कुम्भकरण के पास आया। उसने उसके चरण छुए। कुम्भकरण ने अपने भाई विभीषण को छाती से लगाया। विभीषण ने अपने भाई को बताया—

तात लात रावन मोहि मारा।
कहत परम हित मंत्र विचारा॥
तेहि गलानि रघुपति पहिं आयउं।
देखि दीन प्रभु के मन भायउं॥

"रावण ने मेरे लात मारी। उसने मेरी अच्छी सलाह को भी नहीं माना। मैं अपमान के कारण राम के पास चला गया। उन्होंने मुझे दुःखी समझकर प्रेमपूर्वक अपना लिया।"

कुम्भकरण ने कहा, "हे भाई, रावण इस समय मृत्यु के वशी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भत हो गया है। वह अब कोई भी अच्छी बात मानने को तैयार नहीं। तुमने अच्छा किया जो राम की शरण में चले गये। तुम राम का भजन करो। तुम धन्य हो, परंतु चूंकि मुझे अब अपना और पराया नहीं सूझ रहा, इसलिए मैं रावण की बात मानकर युद्ध करने के लिए जा रहा हूं।"

विभीषण अपने भाई कुम्भकरण की बात से बड़ा दुःखी हुआ। वह तुरंत राम के पास पहुंचा। वहां उसने श्रीरामचंद्रजी को बताया, "कुम्भकरण युद्ध के लिए आ रहा है।"

उसकी बात सुनकर राम के सैनिक युद्ध के लिए तैयार हो गये। सबसे पहले कुम्भकरण और हनुमान का युद्ध हुआ। हनुमान ने कुम्भकरण को एक घूंसा मारा। वह पछाड़ खाकर नीचे गिर पड़ा। फिर संभलकर उसने हनुमान को मारा। हनुमान उसकी मार से व्याकुल होकर भूमि पर गिर पड़े। कुम्भकरण ने नल, नील और अंगद आदि सारे योधाओं को मूर्छित कर दिया। सुग्रीव को उसने अपनी कांख में दबा लिया। सुग्रीव धीरे-से वहां से खिसक गया और उसने दांतों से कुम्भकरण के नाक-कान काट लिये। यह देखकर कुम्भकरण बहुत ही क्रुद्ध हो उठा। उसने विकराल रूप धारण कर लिया। चारों ओर मारामार मचा दी। इससे राम की सेना में कोहराम मच गया। राम को जब इस बात का पता चला तो वह स्वयं कुम्भकरण से लड़ने के लिए चल दिये।

सुनु सुग्रीव विभीषन, अनुज संभारेहु सैन।
मैं देखउं खल बल दलहिं, बोले राजिव नैन॥

रामचंद्रजी ने अपने सेनापतियों को सम्बोधित करते हुए कहा, "हे सुग्रीव, विभीषण और लक्ष्मण सुनो! तुम सब सेना को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संभाल करो। मैं इस दुष्ट के बल और इसकी सेना को देखता हूं।" इतना कहकर राम कुम्भकरण से युद्ध करने के लिए चल दिये।

कर सारंग साजि कटि भाथा।
अरि दल दल न चले रघुनाथा॥
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टंकोरा।
रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा॥

राम ने कमर में तरकश कस लिया और हाथ में शारङ्ग धनुष उठा लिया। राक्षसों के समूह को नष्ट करने के लिए राम ने सबसे पहले धनुष को ऐसी टंकोर की कि उसकी गर्जन सुनकर राक्षस बहरे हो गये।

राम के वाणों के द्वारा राक्षस-सेना का विनाश प्रारंभ हो गया। वाण लगने से राक्षसों के सिर कट-कटकर भूमि पर गिरने लगे।

लागत बान जलद जिमि गाजहिं।
बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं॥

राम के वाण लगने से बादलों जैसी घोर गर्जना होने लगी। बहुत-से राक्षस तो रामचंद्रजी के वाणों को देखकर ही भागने लगे। चारों ओर हाहाकार मच गया।

राम और कुम्भकरण में भयंकर युद्ध हुआ। राम ने तरह-तरह के बाण छोड़े। कुम्भकरण ने भी अपनी पूरी शक्ति लड़ने में लगा दी। उसने विशाल पत्थरों-चट्टानों को भी उनपर फेंका। राम ने अपने वाणों से काटकर उसे घायल कर दिया। वह फिर भी भयंकर रूप में युद्ध करता रहा। राम ने उसका मुंह बाणों से भर दिया, फिर भी वह न गिरा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा ।
धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा ।।
सो सिरु परेउ दसानन आगें ।
बिकल भयउ जिमि फनिमनि त्यागें ।।

राम ने क्रोध में भरकर एक बड़ा तेज बाण मारा । उसके लगते ही कुम्भकरण का सिर कट गया । वह सिर जिस समय रावण के सामने जाकर पड़ा तो वह ऐसे व्याकुल हो उठा जैसे सांप अपनी मणि को खोकर तड़पता है ।

कुम्भकरण के मरने पर लंकापुरी में शोक छा गया । रावण भी अपने भाई के मरने पर विलाप करने लगा । वह अपने भाई के सिर को अपनी गोद में रखकर बहुत रोया । लंका की नारियां कुम्भकरण के बल का बखान करती हुई अपना शोक प्रगट करने लगीं ।

मेघनाद तेहि अवसर आयउ ।
कहि बहु कथा पिता समुझायउ ।।
देखेहु कालि मोरि मनुसाईं ।
अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ।।

इस अवसर पर रावण का पुत्र मेघनाद वहां आ गया । उसने तरह-तरह की बातें कहकर अपने पिता रावण को समझाया । उसने कहा, "पिता । अब मैं अपने मुख से अपनी क्या बड़ाई करूं । कल मेरे पुरुषार्थ को देखना ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

: २ :

मेघनाद-बध

मेघनाद दूसरे दिन युद्ध-भूमि में गया। उसने वानर-सेना को मारना प्रारंभ कर दिया।

पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन।
सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन॥
पुनि रघुपति सैं जूझै लागा।
सर छांड़इ होइ लागहिं नागा॥

मेघनाद ने लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण को इतने बाण मारे कि उनका शरीर बिंध गया। इसके बाद वह राम से जूझने

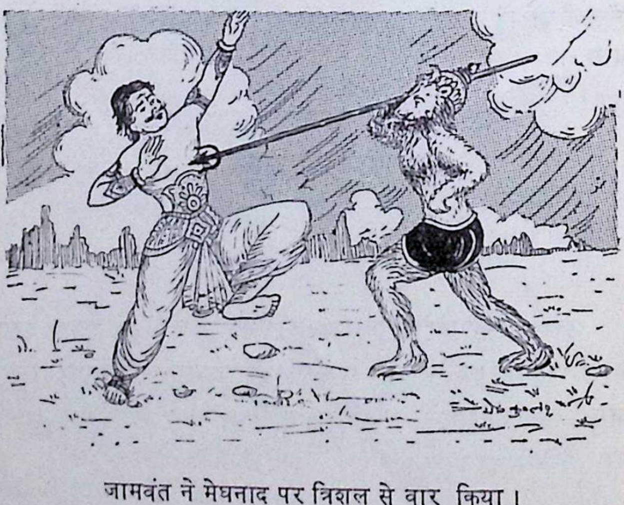

जामवंत ने मेघनाद पर त्रिशूल से वार किया।

लगा। उसके बाण सांप की तरह लगे। उस दशा को बूढ़े जामवंत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने देखा। वह तुरंत अपना त्रिशूल उठाकर मेघनाद पर झपटा। उसने वह त्रिशूल मेघनाद की छाती में मारा। वह व्याकुल होकर भूमि पर गिरा। राक्षस लोग उसे मूर्च्छित दशा में उठाकर रावण के पास ले गये। मूर्छा से जागने पर मेघनाद बड़ा लज्जित हुआ, क्योंकि उस अपने बल पर भरोसा था। वह समझ रहा था कि युद्ध में उसकी जीत होगी, परन्तु बूढे जामवंत के त्रिशूल लगने से वह हार गया। इस हार के बाद उसने अपनी शक्ति को बढ़ाने का उपाय निकाला।

उसने अपनी शक्ति को बढ़ान के लिए एक विशेष यज्ञ करने का निश्चय किया। वह एक गुप्त पहाड़ी गुफा में गया। वहां उसने यज्ञ प्रारंभ कर दिया। उस यज्ञ में उसने अनेक जीवों की बलि भी चढ़ा दी। इस यज्ञ का भेद जब विभीषण को चला तो वह राम के पास गया। उसने सलाह दी कि मेघनाद के यज्ञ को नष्ट कर दिया जाय। राम उसकी बात से सहमत होगये। उन्होंने लक्ष्मण को यह कार्यभार सौंपा।

लछिमन संग जाहु सब भाई।
करहु विधंस जग्य कर जाई॥
तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही।
देखि सभय सुर दुख अति मोही॥

राम ने आज्ञा दी, "हे भाइयो ! तुम सब लोग लक्ष्मण के साथ जाओ। मेघनाद के पास पहुंचकर तुम उसके यज्ञ को नष्ट कर दो।" राम ने अपने भाई लक्ष्मण से कहा "हे लक्ष्मण ? तुम उसको रण में मारना। देवताओं को भयभीत देखकर मुझे बड़ा दुख होता है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब रामचंद्रजी की इस प्रकार आज्ञा मिली तो लक्ष्मण ने कमर में तरकस कसा और धनुष-बाण संभाला। उन्होंने प्रतिज्ञा की।

जौं तेहि आजु वधे बिनु आवौं।
तौ रघुपति सेवक न कहावौं॥
जौं सत शंकर करहिं सहाई।
तदपि हतऊं रघुबीर दोहाई॥

"जो मैं आज उसे बिना मारे लौटूं तो श्री रघुनाथजी का सेवक नहीं कहलाऊंगा। यदि आज सैकड़ों शंकर भी मेघनाद की सहायता करें तो भी मैं उसे मारूंगा। मुझे श्रीराम की दुहाई है।"

इस प्रकार राम की सेना वहीं पहुंच गई जहां मेघनाद यज्ञ

मेघनाद के यज्ञ का विध्वंस

कर रहा था। वानरों ने वहां पहुंचकर मेघनाद का यज्ञ विध्वंस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना प्रारंभ किया। उन्होंने उसके बाल खींचे और लातें मारी। इसपर मेघनाद को क्रोध आ गया और वह त्रिशूल लेकर झपटा। उसने हनुमान और अंगद पर आक्रमण किया। उनकी छाती में त्रिशूल लगा और वे धरती पर गिर पड़े। इसके बाद उसने लक्ष्मण पर त्रिशूल का प्रहार किया। लक्ष्मण ने अपना वाण चलाया और त्रिशूल के दो टुकड़े कर दिये ।

इतने में ही हनुमान और अंगद भी खड़े हो गये। उन्होंने फिर मेघनाद पर प्रहार करना प्रारंभ कर दिया। लक्ष्मणजी ने भी वाण मारने में कोई कमी न की।

देखेसि आवत पवि सम बाना ।
तुरत भयउ खल अंतरधाना ।।
बिबिध वेषि धरि करइ लराई ।
कबहुंक प्रगट कबहुं दुरि जाई ।।

लक्ष्मण द्वारा छोड़े गये वज्र के समान बाणों को अपनी ओर आता देखकर दुष्ट मेघनाद तुरंत छिप गया। वह तरह-तरह का वेष बनाकर युद्ध करने लगा। वह कभी प्रकट हो जाता था और कभी छिप जाता था। उसकी माया को देखकर वानर-सेना चकित हो गई।

मेघनाद को न मरते देखकर वानर डरने लगे। लक्ष्मण मेघनाद की रची माया को देखकर क्रोध में भर गये। वे मन-ही-मन सोचने लगे कि इस पापी को अबतक मैंने बहुत खिलाया परंतु अब इसे मार ही देना चाहिए, जिससे वानर-सेना का भय दूर हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा ।
सर संधान कीन्ह करि दापा ।।
छाड़ा बान माझ उर लागा ।
मरती बार कपटु सब त्यागा ।।

लक्ष्मण ने श्रीराम के प्रताप का स्मरण किया और वीरों के दर्प के साथ धनुष पर बाण चढ़ाया । उन्होंने बाण मेघनाद पर इस तरह छोड़ा कि वह उसकी छाती में लगा । बाण लगने पर वह मरणासन्न हो गया । मरते समय उसने सारा छल-कपट छोड़ दिया ।

रामानुज कहं रामु कहं, असि कहि छांड़ेसि प्रान ।
धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान ।।

मेघनाद ने राम और लक्ष्मण को याद करते हुए कहा, "राम का छोटा भाई लक्ष्मण कहां है? राम कहां है ?" ऐसा कहकर उसने अपने प्राण छोड़ दिये । अंगद और हनुमान कहने लगे, "तेरी माता को धन्य है, धन्य है ।"

बिनु प्रयास हनुमान उठायो ।
लंका द्वार राखि पुनि आयो ।।

हनुमान ने बिना प्रयास के सरलता से मेघनाद को उठा लिया और लंका के दरवाजे पर रख आये ।

मेघनाद के मरने पर देवताओं ने बड़ा हर्ष मनाया । वे रामचंदजी के यश का गान करने लगे; परंतु रावण ने जब अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुना तो वह मूच्छित हो गया । मन्दोदरी अपने पुत्र के लिए छाती पीट-पीट कर विलाप करने लगी । मेघनाद के मरने से सारी लंका में शोक छा गया । रावण ने तब सबको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'संसार नाशवान है' ऐसा कहकर तसल्ली दी।

इसके पश्चात जब रात बीत गई और सवेरा हुआ तो फिर युद्ध की तैयारी होने लगी। राम ने बानर सेना को आज्ञा दी कि वह लंका के चारों दरवाजों पर जाकर युद्ध करे। सुग्रीव, अंगद और हनुमान ने सेना का बड़े सुन्दर ढंग से संचालन किया। उनके बताने के अनुसार बानर सेना लंका के चारों दरवाजों पर पहुंच गई।

: ३ :

रावण से युद्ध

राम की सेना ने जब लंका को चारों तरफ से घेर लिया तो रावण को पता चला। उसने भी युद्ध की तैयारी प्रारंभ कर दी। उसने अपने योधाओं को बुलाकर कहा—

सुभट बोलाइ दसानन बोला।
रन सम्मुख जाकर मन डोला॥
सो अबहीं बरु जाउ पराई।
संजुग बिमुख भएं न भलाई॥
निज भुजबल मैं बयरु बढ़ावा।
देहउं उतरु जो रिपु चढ़ि आवा॥

"युद्ध में पहुंचकर जिसका मन डांवाडोल हो जाय, अच्छा है वह अभी भाग जाय। युद्ध में पहुंचकर लौट आने में भलाई नहीं है। मैंने अपनी भुजाओं के बल पर ही राम से बैर बढ़ाया है। इस समय जो शत्रु लंका पर चढ़ आया है, उससे मैं अपने-आप ही भुगत लूंगा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतना कहकर रावण ने पवन के समान तेज चलनेवाला रथ सजवाया और अपने सुभटों को साथ लेकर युद्ध के लिए चल दिया। उसके साथ मतवाले हाथी भी चले। सेना के चलने से चारों ओर प्रलय के बादल छा गये।

उठी रेनु रवि गयउ छिपाई।
मरुत थकित बसुधा अकुलाई॥
पनव निसान घोर रव बाजहिं।
प्रलय समय के घन जनु गाजहिं॥

आकाश में इतनी धूल उड़ी कि सूर्य छिप गया। हवा का चलना बंद हो गया और पृथ्वी अकुला गई। ढोल और नगाड़े भयंकर आवाज के साथ ऐसे बजने लगे जैसे कि प्रलय काल के बादल गरजते हैं।

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा।
देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा।
बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना।
केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥

जब विभीषण ने देखा कि रावण तो रथ में बैठा है और श्री राम बिना रथ के हैं तो उसका मन अधीर हो उठा, राम के प्रति अगाध प्रेम होने से उसके मन में शंकाएं पैदा होने लगीं। राम के चरणों की वंदना करते हुए प्रेमपूर्वक उसने कहा "हे नाथ, आपके पास न रथ है, न शरीर की रक्षा करनेवाला कवच है और न जूते हैं। उस वीर बलवान रावण को आप किस प्रकार से जीतेंगे?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुनहु सखा कह कृपानिधाना ।
जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका ।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका ।।
बल विवेक दम परहित घोरे ।
छमा कृपा समता रजु जोरे ।।

रामचंद्रजी ने उत्तर दिया, "हे मित्र, सुनो ! जिससे जय प्राप्त होती है, वह रथ दूसरा ही है । उस रथ के पहिये शूरता और धीरता हैं । सत्य और शील उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं । बल, ज्ञान, इंद्रियों का दमन और परोपकार ये चार उसके घोड़े हैं । ये सब क्षमा, दया और समता की रस्सी से रथ में जुड़े हुए हैं ।"

रामचंद्रजी ने आगे कहा "ईश्वर का भजन रथ का चतुर सारथी है । वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है । दान फरसा है और बुद्धि प्रचंड शक्ति । इसी प्रकार से उन्होंने तरकस व बाण आदि को भी बताया । अंत में उन्होंने कहा—

सखा धर्ममय अस रथ जाके ।
जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके ।।

"हे सखे ! ऐसा धर्म का रथ जिसके पास हो, उसके लिए जीतने को कहीं पर कोई शत्रु ही नहीं है ।"

सुनि प्रभु वचन विभीषन, हरषि गहे पदकंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु, रामकृपा सुखपुंज ।।

रामचंद्रजी के वचन सुनकर विभीषण की शंका मिट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गई। उन्होंने राम के कमलरूपी चरणों को छुआ और कहा, "हे कृपालु और सुख के समूह आपने इसी बहाने से मुझे उपदेश दिया।"

रावण के साथ राम की सेना का घोर युद्ध होने लगा। वानर सेना व्याकुल होकर पुकारने लगी, "हे रघुवीर! हे गुसाईं! हमारी रक्षा करो, यह दुष्ट काल की तरह हमें खा रहा है।" लक्ष्मणजी ने जब अपनी सेना को इस प्रकार व्याकुल देखा तो वह क्रोध में भरकर कहने लगे—

रे खल का मारसि कपि भालू।
मोहि बिलोकु तोर मैं कालू॥
खोजत रहेउं तोहि सुतघाती।
आजु निपाति जुड़ावउं छाती॥

"अरे दुष्ट, वानर और भालुओं को तू क्या मार रहा है? मुझे देख मैं तेरा काल हूं।"

लक्ष्मण की बात का उत्तर देते हुए रावण ने कहा, "अरे मेरे पुत्र को मारनेवाले मैं तुझे ही ढूंढ रहा था। आज तुझे मारकर मैं अपनी छाती ठंडी करूंगा।"

रावण ने ऐसा कहते हुए कई प्रचंड बाण छोड़े। लक्ष्मणजी ने उनके सैकड़ों टुकड़े कर डाले। रावण ने फिर अनेक प्रकार से अस्त्र-शस्त्र चलाये; परंतु लक्ष्मणजी ने उन सबको काट गिराया और रावण पर ऐसी बाण-वर्षा की कि वह भूमि पर गिर पड़ा। उसे सुधि तक न रही।

उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी।
छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो सांगी॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूर्छा से जागकर बलवान रावण संभला । इस बार उसने ब्रह्मा की दी हुई शक्ति को चलाया ।

रावण ी यह शक्ति लक्ष्मणजी ी ाती में लगी । इसके लगते ही वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े । यह देखकर हनुमान आगे बढ़े और उन्होंने रावण को मारना चाहा; परंतु रावण ने उनके एक घूंसा मारा। तुरत घुटने टेककर हनुमान संभल गये और उन्होंने तानकर रावण के एक घूंसा मारा। घूंसा लगते ही रावण पृथ्वी पर गिर पड़ा ।

इतने में हनुमान ने मूर्च्छित हुए लक्ष्मण को उठाया ीर

रावण की शक्ति लगते ही लक्ष्मण बेहोश होगये ।

राम के पास ले चले । श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा "हे भाई ! हृदय में समझो कि तुम काल को भी खा जानेवाले हो और देवताओं के रक्षक हो । फिर इस तरह व्याकुल क्यों हो ?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुनत वचन उठि बैठ कृपाला ।
गई गगन सो सकति कराला ॥
पुनि कोदंड बान गहि धाए ।
रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥

राम की ऐसी वाणी सुनते ही लक्ष्मणजी उठ बैठे । वह कराल शक्ति, जो उनकी छाती में लगी थी, आकाश को चली गई । फिर धनुष-बाण संभालकर वह दौड़े और तुरंत शत्रु के सामने जाकर युद्ध करने लगे ।

शीघ्र ही लक्ष्मणजी ने रावण के रथ को चूर-चूर कर दिया । सारथी को मार डाला । रावण व्याकुल हो उठा । लक्ष्मणजी ने उसे भी अपनी बाण-वर्षा से बेध डाला । उसके एक दूसरे सारथी ने तुरंत ही उसको उठाया और रथ में डालकर लंका में ले गया । लक्ष्मण यह देखकर वापस लौटे और उन्होंने राम के चरणों में मस्तक झुकाकर युद्ध की विजय का समाचार सुनाया ।

उधर रावण अपने महल में पहुंचकर जब मूर्छा से जागा तो यज्ञ करने लगा । उसके यज्ञ करने का समाचार विभीषण ने रामचंद्रजी को दिया । राम ने वानर-सेना को आज्ञा दी कि वह तुरंत रावण के यज्ञ को विध्वंस कर दे जिससे उसे कोई शक्ति प्राप्त न हो । बस वानर-सेना तत्काल रावण के महल में पहुंच गई ।

कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ।
पैठे रावन भवन असंका ॥
जग्य करत जबहीं सो देखा ।
सकल कपिन्ह भा क्रोध बिसेषा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रन ते निलज भाजि गृह आवा ।
इहां आइ बक ध्यान लगावा ।।
अस कहि अंगद मारी लाता ।
चितव न सठ स्वारथ मन राता ।।

वानर खेल-सा मचाते हुए कूदकर लंका पर चढ़ गये । वे निर्भय होकर रावण के महल में घुस गये । ज्योंही उन्होंने रावण को यज्ञ करते देखा त्योंही वे क्रोध से पागल हो उठे । वे कहने लगे, "अरे निर्लज्ज ! रणभूमि से भागकर घर में आ घुसा और यहां पर आकर तूने बगले जैसा ध्यान लगाया है ।" अंगद ने उसके एक लात मारी । लात खाकर भी रावण ने उसकी तरफ देखा तक नहीं । उसका मन उस समय अपने यज्ञ को सफल करने में लग रहा था । उस समय वह अपनी मनोकामना की सिद्धि करना चाहता था । इसलिए वह बिलकुल चुप रहा ।

: ४ :

रावण-बध

वानरों ने रामचंद्रजी को यज्ञ विध्वंस कर देने का समाचार सुनाया । उन्होंने तत्काल युद्ध की तैयारी की । देवताओं ने भी भगवान राम से प्रार्थना की कि अब रावण को देर तक जीवित रखकर खेल मत खिलाओ, क्योंकि सीताजी बड़ी व्याकुल हो रही हैं ।

देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर राम स्वयं ही युद्ध के लिए चल दिये । रावण भी अपनी सारी सेना के साथ फिर युद्ध में आ धमका । उसने सोचा कि मेरी सेना बहुत-कुछ मारी जा चुकी है । वानर-सेना बहुत बड़ी संख्या में है । इसलिए वह माया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रचकर युद्ध लड़ने लगा ।

देवन्ह प्रभुहिं पयादें देखा ।
उपजा उर अति छोभ विसेषा ॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा ।
हरष सहित मातलि लै आवा ॥
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा ।
हरषि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥

जब देवताओं ने श्रीराम को पैदल देखा तो उनके हृदय में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ । इंद्र ने तुरन्त अपना रथ भेजा । मातलि हर्ष के साथ उसे लेकर आ पहुंचा । उस शोभायमान अनोखे और तेजोमय रथ पर अयोध्यापति राम हर्षित होकर चढ़ गये ।

युद्ध के समय रावण ने अपनी माया का विस्तार कर दिया । वहां अनेक राम दिखाई देने लगे । राम इस भेद को तुरंत समझ गये । उन्होंने अपने बाण के द्वारा उस माया को समाप्त कर दिया । उन्होंने अपनी सेना को साहस देते हुए कहा, "घबड़ाओ नहीं, अब तुम मेरा और रावण का युद्ध देखो ।"

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा ।
विप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥

राम ने ऐसा कहते हुए ब्राह्मणों के चरण कमलों में मस्तक झुकाकर अपना रथ आगे चलाया । यह देखकर रावण के हृदय में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

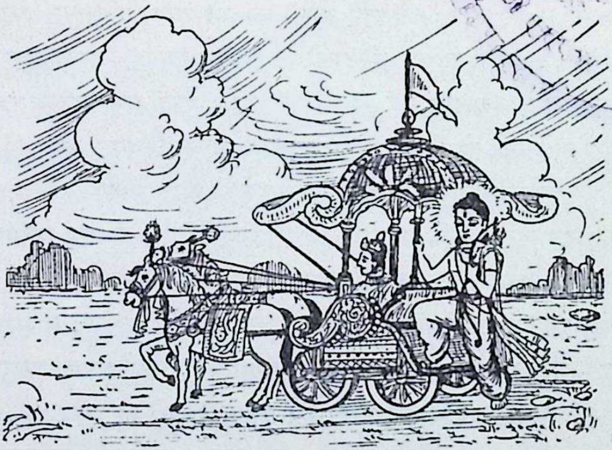

श्रीराम इन्द्र के दिव्य रथ पर सवार हो गये

क्रोध भर आया। वह गर्जना करता हुआ राम के सामने आया। वह कहने लगा—

रावन नाम जगत जस जाना।
लोकप जाके बंदी खाना॥
खर दूषन बिराध तुम्ह मारा।
बधेउ व्याध इव बालि बिचारा॥
निसिचर निकर सुभट संघारेहु।
कुंभकरन घननादहि मारेहु॥
आज बयरु सबु लेऊं निबाही।
जौं रन भूप भाजि नहिं जाही॥

"मेरा नाम रावण है। मेरा यश सारा संसार जानता है। मेरे बंदीघर में लोकपाल बंद पड़े हैं। तुमने खर, दूषण और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विराध को मारा है। बेचारे बाली की भी व्याध की तरह हत्या की है। बड़े-बड़े राक्षस योद्धाओं का संहार किया। तुमने कुम्भकरण और मेघनाद को भी मार डाला। यदि तुम आज युद्ध से भाग नहीं गये तो मैं तुमसे इन सबका बदला निकाल लूंगा।"

राम ने उसकी बातों को सुनकर कहा, "अब तू व्यर्थ की बकवास मत कर। यदि तुझमें बल है तो रण में दिखा।" यह सुनकर रावण ने बज्र के समान भयंकर बाण छोड़ने प्रारंभ कर दिये। रामचंद्रजी ने अग्नि-बाण छोड़कर उन सबको क्षणभर में भस्म कर दिया। रावण ने फिर शक्ति चलाई, परंतु राम ने बाण मारकर उसे भी वापस कर दिया। श्रीराम ने उसके सारथी को मार डाला। वह दूसरे रथ पर चढ़कर आया। उसने नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र छोड़े पर वे सब व्यर्थ गये। राम ने तीस बाण मारकर उसके दसों सिर व बीसों भुजाएं काट डालीं परंतु काटते ही वे फिर नये हो गये। बार-बार ऐसा ही हुआ। उसके कटे सिर आकाश में उड़कर भय पैदा करने लगे। रावण ने विभीषण पर आक्रमण किया, परंतु राम और फिर हनुमान ने उसकी रक्षा की।

लरत अकास जुगल सम जोधा।
एकहि एकु हनत करि क्रोधा॥
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं।
कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं॥
बुधि बल निसिचर परइ न पारयो।
तब मारुत सुत प्रभु संभारयो॥

रावण ने हनुमान पर भी घातक प्रहार किया परंतु वह सावधान होकर उसके आक्रमण से बच गये। उन दोनों का आकाश में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भी युद्ध हुआ।

दोनों योद्धा बड़ी वीरता के साथ आकाश में लड़ने लगे। दोनों ही क्रोध में भरकर एक-दूसरे को मारने लगे। एक-दूसरे के साथ बहुत-सा छल, बल करते हुए वे ऐसे दिखाई पड़ रहे थे मानों कज्जल गिरि और सुमेरु पर्वत में लड़ाई हो रही हो। बुद्धि और बल दोनों से ही रावण आकाश से नीचे नहीं गिराया जा सका। ऐसी दशा में हनुमान ने भगवान राम का स्मरण किया। देखते-देखते रावण ने माया प्रगट की। करोड़ों रावण वानरों के पीछे भागने लगे। तब वानर और देवता सभी विकल हो उठे। यह देखकर राम स्वयं रावण के सामने आ डटे। वानर-सेना भी रावण से युद्ध के लिए आगे बढ़ आई। सबसे पहले भगवान राम ने रावण की इस माया को नष्ट कर दिया।

प्रभु छन महुं माया सब काटी।
जिमि रवि उएं जाहि तम फाटी॥
रावनु एकु देखि सुर हरषे।
फिरे सुमन बहु प्रभु पर बरसे॥

जिस तरह से सूर्य के निकलने से अंधेरा फट जाता है ऐसे ही राम ने रावण की माया का विनाश कर दिया। केवल एक रावण देखकर देवता बड़े प्रसन्न हुए। राम पर देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की।

इस प्रकार राम और रावण में भयंकर युद्ध होने लगा। रावण की भुजाएं, सिर कट-कटकर गिरने लगे परंतु वह बराबर युद्ध करता ही रहा। उधर सीताजी को भी रावण के भयंकर युद्ध का समाचार बराबर मिल रहा था। वह बड़ी चिंता में थीं। त्रिजटा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाण लगते ही रावण भूमि पर गिरने लगा

ने उनको बड़ा धैर्य बंधाया और बताया, "जब रामचंद्रजी रावण की नाभि में तीर मारेंगे तब वह मरेगा।"

यही हुआ भी जब विभीषण ने राम को यह रहस्य बताया तब राम ने रावण के शरीर को खंड-खंड कर दिया। एक बाण रावण के नाभि कुंड में लगा। उसकी नाभि में अमृत भरा हुआ था और वह उसीके बल पर जीवित था। बाण लगते ही उसकी नाभि का अमृत सूख गया और वह भूमिपर गिर पड़ा। उसकी मृत्यु हो गई। धरती हिल उठी। ब्रह्माण्ड जय-ध्वनि से गूंज उठा।

बरषहिं सुमन देव-मुनि वृंदा।
जय कृपाल जय जयति मुकुन्दा॥

रावण की मृत्यु पर देवता और मुनि लोग फूलों की वर्षा करने लगे। उन्होंने राम का जय-जयकार किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जब मंदोदरी को पता चला कि उसका पति मारा गया तो उसका हृदय शोक से फट गया। वह मूर्छित होगई। मूर्च्छा से जगकर कहने लगी।

जगत बिदित तुम्हरि प्रभुताई।
सुत परिजन बल बरनि न जाई ॥
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा।
रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥

"तुम्हारी प्रभुता संसार भर में प्रसिद्ध थी। तुम्हारे पुत्रों और कुटुंबियों के बल का वर्णन नहीं हो सकता, परंतु रामचंद्रजी के विरोध के कारण तुम्हारी यह दशा हुई कि आज कुल में तुम्हें रोने-वाला भी कोई नहीं रहा।"

विभीषण को भी अपने भाई के मरने पर दुख हुआ। रामचंद्रजी ने लक्ष्मण को आज्ञा दी कि वह विषीभण को धैर्य बंधावें। लक्ष्मण ने उनको बहुत तरह से समझाया। इसके पश्चात् विभीषण रामचंद्रजी के पास आये।

कृपा दृष्टि प्रभु ताहि बिलोका।
करहु क्रिया परिहरि सब सोका ॥
कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी।
बिधिवत देस काल जियं जानी ॥

श्रीराम ने विभीषण को बड़ी दयाभरी दृष्टि से देखा और उसे आज्ञा दी कि वह सारे शोक को छोड़कर अपने भाई की अंतिम क्रिया करे।

प्रभु की आज्ञा मानकर और हृदय में देश और काल का विचार करके विभीषण ने अपने भाई रावण का विधिपूर्वक अंतिम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कार किया। मंदोदरी आदि रानियों ने भी अपने पति को अंतिम तिलांजलि दी।

: ५ :

विभीषण का राजतिलक

अंतिम संस्कार करके विभीषण राम के पास आया और उन को मस्तक नवाया। श्री राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को बुला-कर कहा।

तुम्ह कपीस अंगद नल नीला।
जामवंत मारुति नयसीला॥
सब मिलि जाहु विभीषण साथा।
सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा॥
पिता वचन मैं नगर न आवहुँ।
आपु सरिस कपि अनुज पठावहुँ॥

"हे लक्ष्मण ! तुम सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जामवंत और हनुमान सभी नीति निपुण हो। तुम सब मिलकर विभीषण के साथ लंकापुरी जाओ। वहां जाकर उनको राजतिलक करो। मैं पिताजी के वचनों के कारण नगर में नहीं जा सकता, परंतु अपने ही समान अपने भाई व वानरों को भेजता हूं।"

श्री रामचंद्रजी का आदेश पाकर वे सब लंका की ओर चल दिये। वहां पहुंचकर उन्होंने विभीषण के राजतिलक की तैयारी की।

सादर सिंहासन बैठारी।
तिलक सारि अस्तुति अनुसारी॥
जोरि पानि सबहीं सिर नाये।
सहित विभीषन प्रभु पहिं आए॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने आदर के साथ विभीषण को राज्य-सिंहासन पर बिठाया और उनको राजतिलक किया। उन्होंने विभीषण की बड़ी बड़ाई की। उन सबने हाथ जोड़कर विभीषण को सिर नवाया। इसके पश्चात् वे सब विभीषण को साथ लेकर श्रीराम की सेवा में उपस्थित हुए।

: ६ :

सीताजी का आगमन

रामचंद्रजी ने हनुमान को अपने पास बुलाया। उन्होंने आज्ञा दी, "हे हनुमान ! अब तुम लंका जाओ। वहां जाकर सीताजी को सब समाचार सुनाओ और उनका कुशल समाचार लेकर तुरंत लौट आओ।

तब हनुमंत नगर महुं आए।
सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही।
जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥

हनुमान लंका नगरी में गये। उनके आने का समाचार सुनकर राक्षस और उनकी स्त्रियां आदर सत्कार के लिए दौड़ीं। उन्होंने बहुत तरह से हनुमान की पूजा की और फिर उन्हें सीताजी के दर्शन कराये।

दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा।
रघुपति दूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता।
कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥

हनुमानजी ने सीताजी को दूर से ही प्रणाम किया। सीताजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने पहचान लिया कि वह श्रीरामका दूत है। पूछा, "हे तात ! कहो, कृपानिधान श्री रामचंद्रजी उनके छोटे भ्राता और वानर-सेना सब कुशल हैं ?"

सब विधि कुसल कोसलाधीसा ।
मातु समर जीत्यो दससीसा ।।
अबिचल राजु विभीषन पायो ।
सुनि कपि वचन हरष उर छायो ।।

हनुमानजी ने उत्तर दिया, "अयोध्यापति श्री रामचंद्रजी सब प्रकार से कुशलपूर्वक हैं। उन्होंने रावण को युद्ध में जीत लिया है और विभीषण ने लंका का अचल राज्य पा लिया है।" हनुमान की ये बात सुनकर सीताजी का हृदय भर उठा।

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता ।
देखौं नयन स्याम मृदु गाता ।।

सीताजी ने हनुमान से कहा, "हे तात ! अब तुम वही उपाय करो जिससे मैं इन नेत्रों से प्रभु के कोमल, श्यामल शरीर के शीघ्र दर्शन करूं।"

तव हनुमान राम पहि जाई ।
जनकसुता के कुसल सुनाई ।।
सुनि संदेसु भानुकुलभूषन ।
बोलि लिये जुबराज विभीषन ।।
मारुतसुत के संग सिधावहु ।
सादर जनकसुतहि लै आवहु ।।

सीताजी की आज्ञा सुनकर हनुमान रामचंद्रजी के पास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वापस गये। उन्होंने राम को सीताजी का कुशल समाचार सुनाया। सूर्यवंश के भूषण श्री रामचंद्रजी ने सीताजी के संदेश को सुनकर अंगद और विभीषण को बुलाया और उनसे कहा, "तुम हनुमान के साथ जाकर सीताजी को आदर सत्कार के साथ ले आओ।"

तुरतहिं सकल गए जहं सीता।
सेवहिं सब निसिचरीं बिनीता।।
बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो।
तिन्ह बहुविधि मज्जन करवायो।।
बहु प्रकार भूषन पहिराए।
सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याए।।
ता पर हरषि चढ़ी वैदेही।
सुमिरि राम सुखधाम सनेही।।

राम की आज्ञा पाकर वे तुरंत सीताजी के पास पहुंचे। उस समय राक्षसी बड़ी विनम्र भाव से सीताजी की सेवाकर रही थीं। विभीषण ने उनको समझाया कि वे अच्छी तरह से सीताजी को स्नान कराके वस्त्र और आभूषण पहिरावें।

राक्षसियों ने गद्‌गद् होकर सीताजी को स्वच्छ जल से स्नान कराया। इसके पश्चात् अनेक प्रकार के आभूषण पहराये। फिर उनके लिए एक सजी हुई पालकी लाई गई। उसपर सीताजी प्रसन्न होकर चढ़ीं। पालकी पर चढ़ते समय सीताजी ने सुख-धाम भगवान राम का स्मरण किया।

सीताजी जब श्री रामचंद्रजी के पास पहुंची तो वानर-सेना उनके दर्शनों के लिए दौड़ीं। पालकी के रक्षकों ने भीड़ को रोकने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का यत्न किया। राम यह सब देख रहे थे।

कह रघुवीर कहा मम मानहु।
सीतहि सखा पयादें आनहु॥
देखहुं कपि जननी की नाईं।
विहंसि कहा रघुवीर गोसाईं॥

श्री रामने हँसते हुए कहा "मेरा कहना मानकर सीता को बिना पालकी पैदल ही आने दो जिससे सारे वानर उनका माता के समान दर्शन कर सकें।"

सीताजी पालकी से उतर गई। बानरों की सेना में अपार हर्ष छा गया। उन्होंने सीताजी के अच्छी तरह से दर्शन किये।

इसी समय राम ने सीताजी की अग्नि परीक्षा लेने की आज्ञा दी। इस बात को सुनकर सब को दुख हुआ, परंतु सीताजी ने लक्ष्मण से तुरंत आग तैयार करने को कहा। राम का संकेत पाकर लक्ष्मण ने ऐसा ही किया। सीताजी ने मन-ही-मन कहा, यदि मन, वचन, कर्म से मेरे हृदय में श्रीराम के अतिरिक्त दूसरी गति नहीं है तो अग्निदेव मेरे लिए चंदन के समान शीतल हो जायं।

श्रीराम का स्मरण कर सीताजी अग्नि में प्रवेश कर गईं। तुरंत अग्निदेव मानवरूप में श्री सीता का हाथ पकड़कर बाहर आये और उन्हें श्रीराम को सौंप दिया।

चारों ओर हर्ष छा गया। डंके बजने लगे। किन्नर गाने और अप्सराएं नाचने लगीं। राम-सीता की शोभा देखकर रीछ-वानर पुलकित हो उठे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुलसी-राम-कथा-माला की पुस्तकें

१. राम-जन्म
२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह
४. राम-वनगमन
५. भरत-भेंट
६. पंचवटी में
७. सीता-हरण
८. सुग्रीव से मित्रता
९. सीता की खोज
१०. लंका-दहन
११. रामदूत अंगद
१२. लक्ष्मण-मूर्च्छित
१३. लंका-विजय
१४. राम-तिलक

सस्ता साहित्य मण्डल

४० तीस नये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu